॥ नित्य तांत्रिक हवन की विधि॥

॥ सिंहावलोकन ॥

- निम्न विधि तांत्रिक नित्यहोम की है जो या तो नित्यार्चन के बाद या अग्निहोत्र/औपासन के पश्चात् किया जा सकता है।
- समयानुसार एक काल या दो काल होम का अनुष्ठान करे।
- नित्य जितना जप करे उसके दशांश का होम करे यह पक्ष भी लिया जा सकता है।
- शक्ति देवता के पक्ष में त्रिकोण या योनि कुण्ड विशेष रूप से प्रशस्त है।
- नित्य होम में कुण्ड/स्थाण्डिल का माप अरत्रि मात्र का होता है।

- नित्य होम में आज्य , बिल्वफल, तंडुल, यव, तिल ,दुग्ध ,मधु फल , शाक ,अपुप या शाकल्य (तिल , चावल,जौ, शकर, गूगल,घी) दक्षिणाचारी के लिए कहे गए हैं।
- वामाचारी साधक मत्स्य, मांसखण्ड,सुरा से नित्य होम करे । समिधा -आम्र , पलाश, अश्वत्थ, अपामार्ग, शमी, अर्क, बिल्वसमिधा, चन्दनकाष्ठ की का उपयोग करे ।)

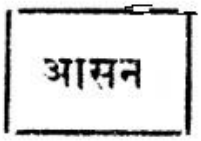

॥ मूलप्रयोग राष्ट्रभाषान्तर ॥

❖ अर्घ्योदक से भूमि शोधन करके तीन रेखा खींचे ।

❖उसके ऊपर गंध (सिन्दूर) से त्रिकोण बनावे ।

❖त्रिकोण के मध्य में रं लिखे और विधिपूर्वक अग्नि लाकर मूल का उच्चारण करके कुण्ड में ,स्थाण्डिल में अथवा भूमि पर व्याहृतित्रय (ॐभूर्भुवस्स्वः) से अग्नि स्थापना करे ।

❖ॐ क्रव्यादाय नमः कहकर कुछ अंश नैर्ऋत्य कोण में विसर्जित करे ।

❖मूल मंत्र+ स्वाहा से ३ आहुति करे ।

❖ षडंग मन्त्रो से आहुति दे ।

ॐ हृदयाय स्वाहा ॥

ॐ शिरसी स्वाहा ॥

ॐ शिखायै स्वाहा ॥

ॐ कवचाय स्वाहा ॥

ॐ नेत्रत्रयाय स्वाहा ॥

ॐ अस्त्राय स्वाहा ॥

❖देवी का आवाहन करके मूल मंत्र से षोडश आहुति देवे ।

❖एक आहुति आवरण देवताओ को भी देवे ।

❖निम्न मंत्र से होम करे ।

ॐ भूः स्वाहा ॥

ॐ भुवः स्वाहा ॥

ॐ स्वः स्वाहा ॥

ॐ भूर्भुवस्स्व स्वाहा॥

❖उपरोक्त आहुति देकर मूलमन्त्र से पूर्णाहुति देवे ।

❖अग्नि का विसर्जन करे ।

❖मूल मंत्र से भस्मधारण करे ।

❖यथासुख विचरण करे ॥